an>

Title: Need to check the rising prices of essential food items.

श्री कौशलेन्द्र कुमार (नालंदा) ः मैं सरकार का ध्यान दाल की बढ़ती कीमतों की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ। आज फिर से दाल की कीमतें आसमान छू रही हैं। गरीबों की तो थाली से दाल गायब ही हो गई है और अमीरों के लिए यह एक महंगा व विशेष पौष्टिक आहार बन गया है। दाल ही मनुष्य के भोजन का एक मुख्य पौष्टिक आहार था, मगर यह भी उनसे दूर होता जा रही है। एक सर्वे के अनुसार, मध्य प्रदेश के आदिवासी इलाके में दाल महंगी हो जाने के कारण, दाल नहीं खाने से लोगों में प्रोटीन की काफी कमी हो गई और सस्ती व न खाने योग्य बटला और सूखी दाल खाने से वे महामारी की चपेट में आ गए हैं। गरीब व मध्यम वर्ग के लोग जो शाकाहारी हैं, उनके लिए दाल ही प्रोटीन का मुख्य स्रोत है वह भी उनके भोजन से गायब हो रही है। आंकड़े बताते हैं कि 60-70 के दशक तक लोगों में प्रोटीन की कमी नहीं थी, किंतु जैसे-जैसे महंगाई बढ़ी, लोगों के भोजन में प्रोटीन की मात्रा कम होती गई और आज स्थिति यह है कि प्रोटीन की कमी 50-60 प्रतिशत तक आम लोगों में पाई गई है जिसके कारण कई तरह की जानलेवा बीमारियों को न्यौता मिल गया है।

अब प्रश्न यह उठता है कि दाल की कीमतों में इतना उछाल क्यों हो रहा है। जबकि सरकारी दावे तो कुछ और ही किए जा रहे हैं मगर तस्वीर उल्टी है। देश में मौसम के अनुकूल नहीं होने के कारण दलहन की पैदावार पिछले दो वर्षों से काफी कम हुई है। इसके विपरीत जमाखोरों पर अंकुश नहीं लग पाने के कारण दाल की काला बाज़ारी हो रही है। इस पर सरकार को तुरंत रोक लगानी चाहिए। जब सरकार के पास बफर स्टॉक है तो फिर महंगाई बढ़ने के क्या कारण हैं? आज अरहर दाल 200 रूपए प्रति किलोग्राम के ऊपर है। मूंगदाल 150 रूपए प्रति किलोग्राम, उड़द दाल 175 रूपए प्रति किलोग्राम, मसूर दाल 130 रूपए प्रति किलोग्राम व चना दाल 85 रूपए प्रति किलोग्राम बाज़ार में बक रही है। अब सरकार ही तय करे कि लोगों को दाल खाने को मिलेगी या नहीं। एक चौंकाने वाला विषय यह भी है कि महंगाई बढ़ाने के फलस्वरूप किसानों को कोई फायदा भी नहीं हुआ है। उनके दलहन तो सस्ते दामों में बिके, किंतु बिकवाली के बाद अचानक दाम बढ़ा दिए गए। सरकार द्वारा जमाखोरों पर तुरंत प्रभावी कार्रवाई न करने के कारण ही जमाखोरों पर अंकुश नहीं लग रहा है, जिससे वे दालों व अन्य खाद्य वस्तुओं की कीमतें बढ़ाने में कामयाब हो रहे हैं। जिसका खामियाजा देश की जनता को भुगतना पड़ रहा है।

अतः मेरा अनुरोध है कि सरकार कोई ठोस कदम उठाकर दालों व अन्य खाद्य वस्तुओं की कीमतों को नियंत्रित करें।